राज
कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 150
प्रलयंकारी मणि
नागराज
मुफ्त
नागराज का एक पोस्टर
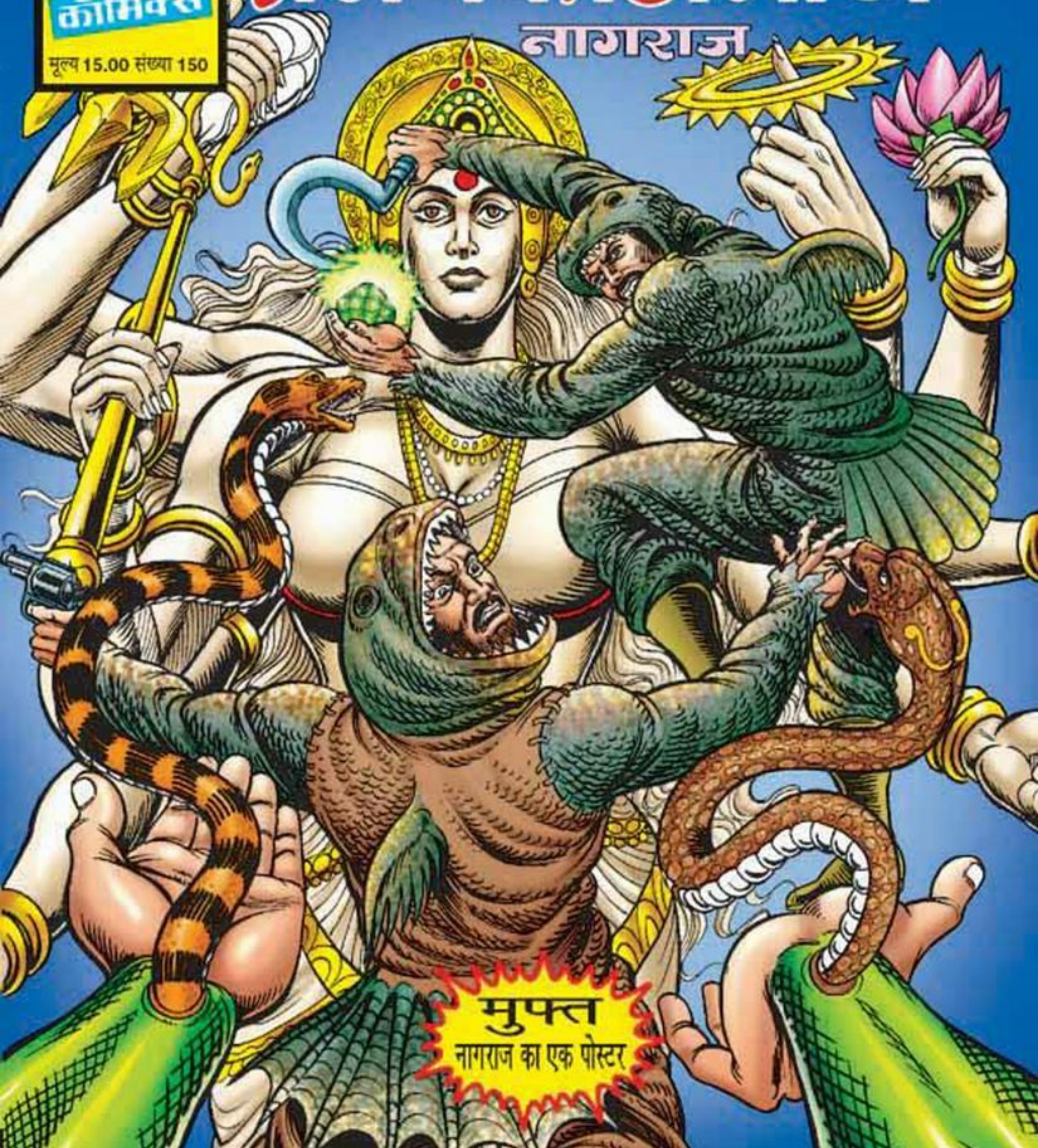
कथा : तरुण कुमार वाही
सम्पादक : मनीष चन्द्र गुप्त
कलानिर्देशक : प्रताप मुलीक
चित्रकार : चंदु
सुलेख : उदय भास्कर

अचानक दोनों बुरी तरह से लड़खड़ा गये

ओह! आऽऽह

उफ... यह क्या?

जहाज को बचाया न जा सका -

और अगली सुबह -
आ SSS ह !
उंह

गोगा?
टॉम? कहीं हम स्वप्न तो नहीं देख रहे?

भगवान का शुक्रिया अदा करो। हम इस भयानक तूफान में भी बच गये हैं।
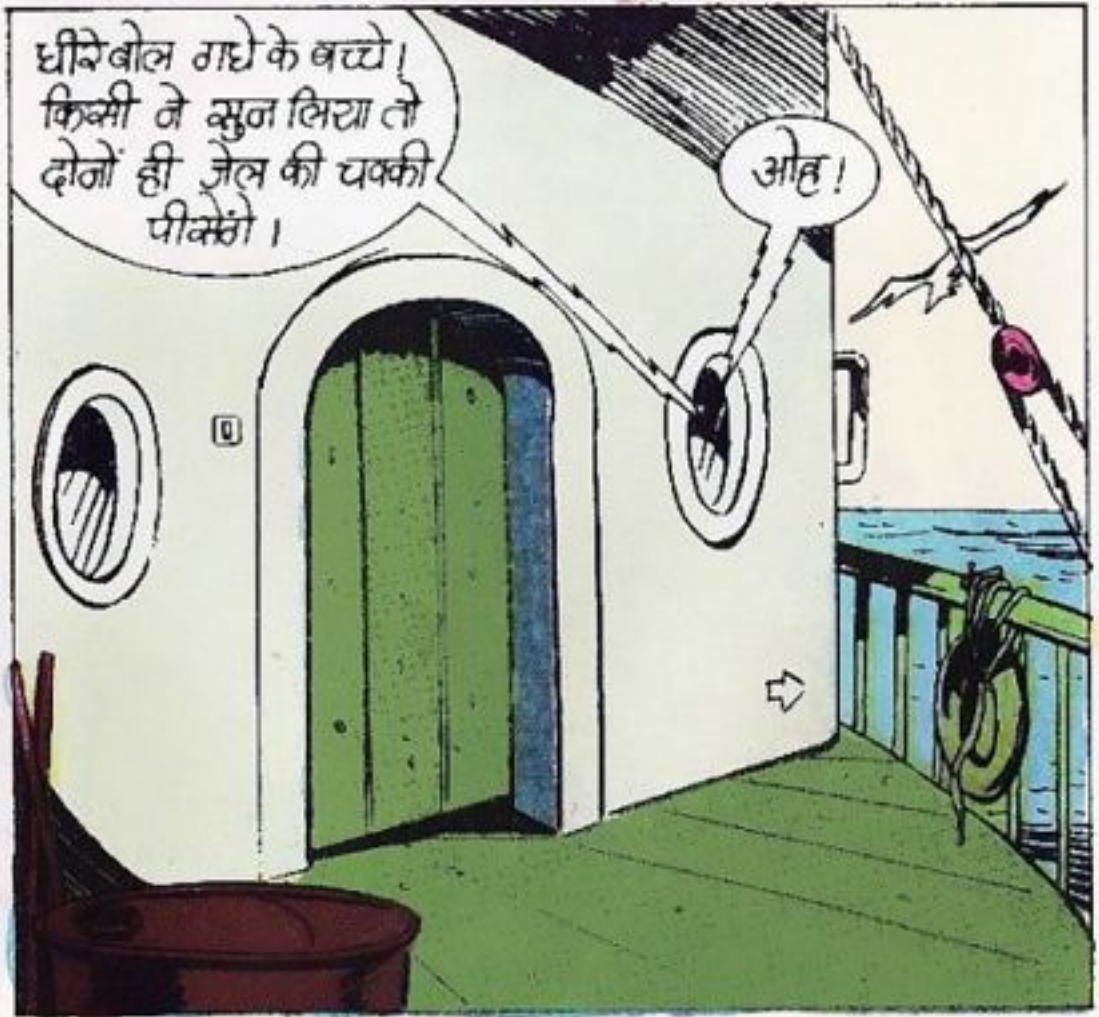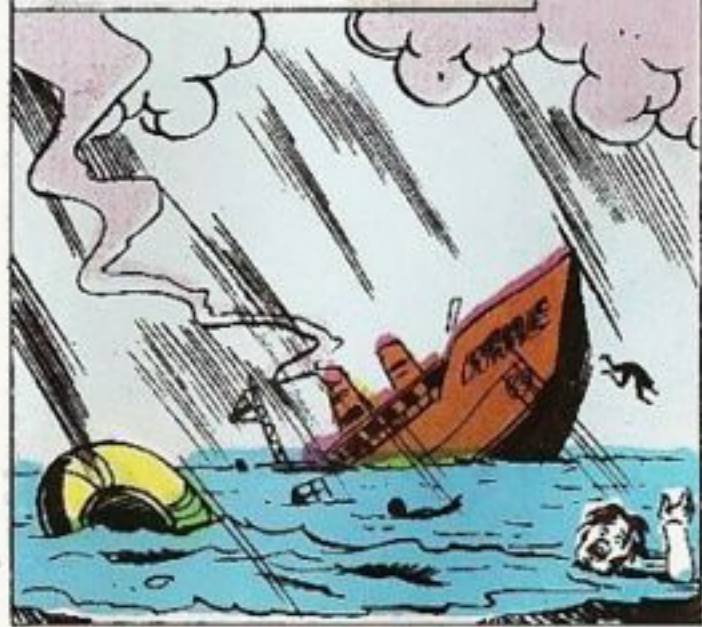
सितारे बुलन्दी पर हैं टॉम! यह देखो टापू !
हवा का वेग बोट को उधर ही ले जा रहा है।

कुछ ही देर में लाइफ बोट किनारे पर आ लगी-
हुर्रे !

अभी दोनों पानी से बाहर भी न आ पाए थे कि अचानक चौंक पड़े-
अरे !
इस द्वीप पर मनुष्य??

उनके देखते ही देखते वे दोनों सांपों में परिवर्तित हो गए –
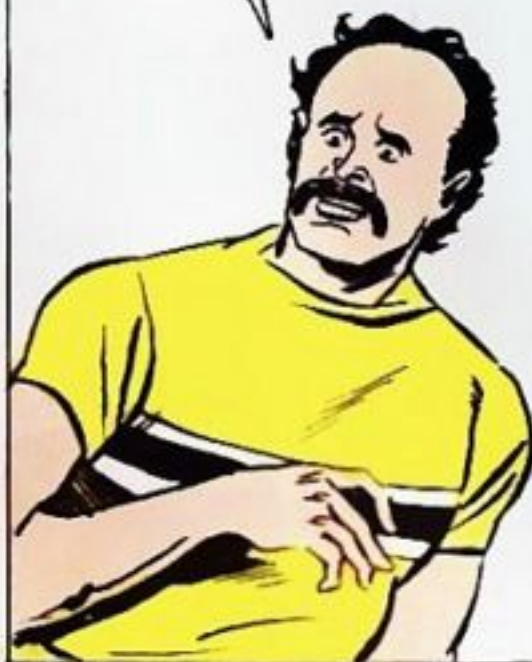
सांप हमारी ओर आ रहे हैं। कहीं हमने इन्हें बचाकर भूल तो नहीं की!
??

दोनों सांप उनके निकट फन फैलाकर खड़े हो गए—
???

और देखते ही देखते पुनः इन्सानों में परिवर्तित हो गए—
इच्छाधारी नाग और नागिन ??
तब तक टॉम रिवॉल्वर वापिस जेब में रख चुका था।

हैरत में डूबे टॉम के मुंह से निकला—
ये जादू है या हमारी आंखें धोखा खा रही हैं?
आप कौन हैं महापुरुष?
इच्छाधारी सांप।

आपने हमारे प्राण बचाकर हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है।
हम आप लोगों के ऋणी हो गए।
य... यह तो हमारा फर्ज था।

तभी कई सांप तेजी के साथ उनकी ओर बढ़े-

उफ इतने सांप

?

सभी सांप उनके इर्द-गिर्द पहुंचकर रुक गए—
??

फिर नाग-पुरुष व नाग-कन्या उन्हें लेकर अपने कबीले में पहुंचे—
अरे, विदेशी!
विदेशी! राजा मणिराज के पुत्र व पुत्री के संरक्षण में ??

और जब मणिराज के सम्मुख पहुंचकर नाग-पुरुष विषप्रिय ने अपनी भाषा में उन्हें कुछ बताया—
ओह!
नागमणि द्वीप पर तुम्हारा स्वागत है मित्रो!

अगर आप लोग समय पर पहुंचकर मेरे बच्चों की प्राण रक्षा न करते तो...
य... यह तो हमारा फर्ज था।

कुछ देर बाद गोगा ने कहा—
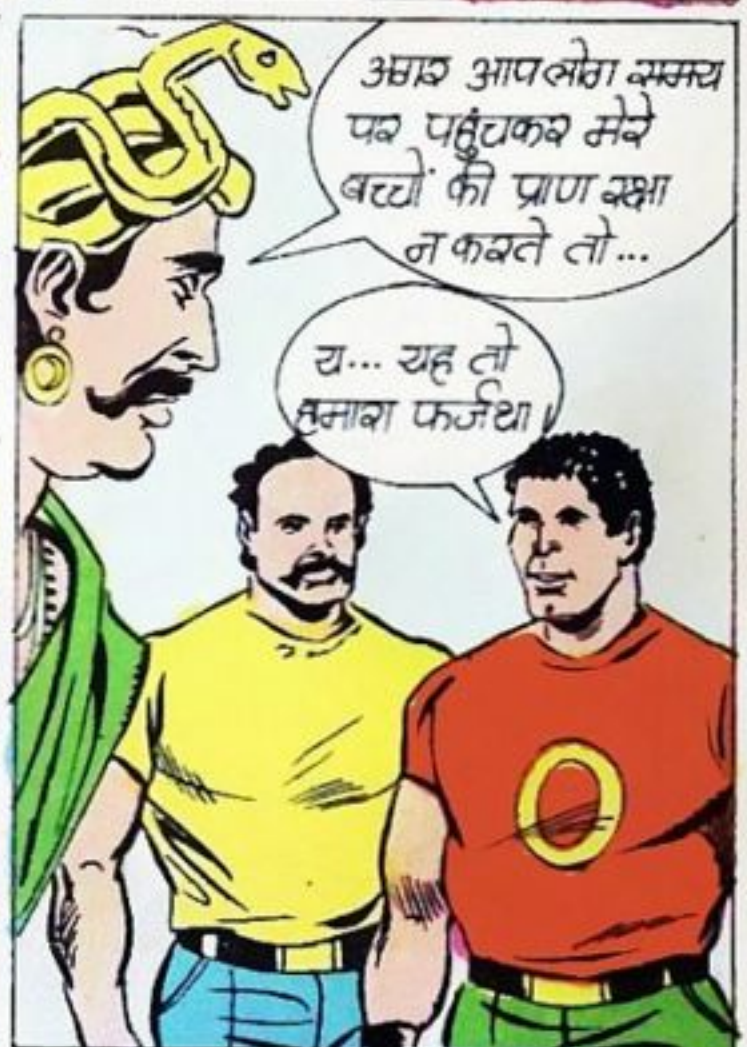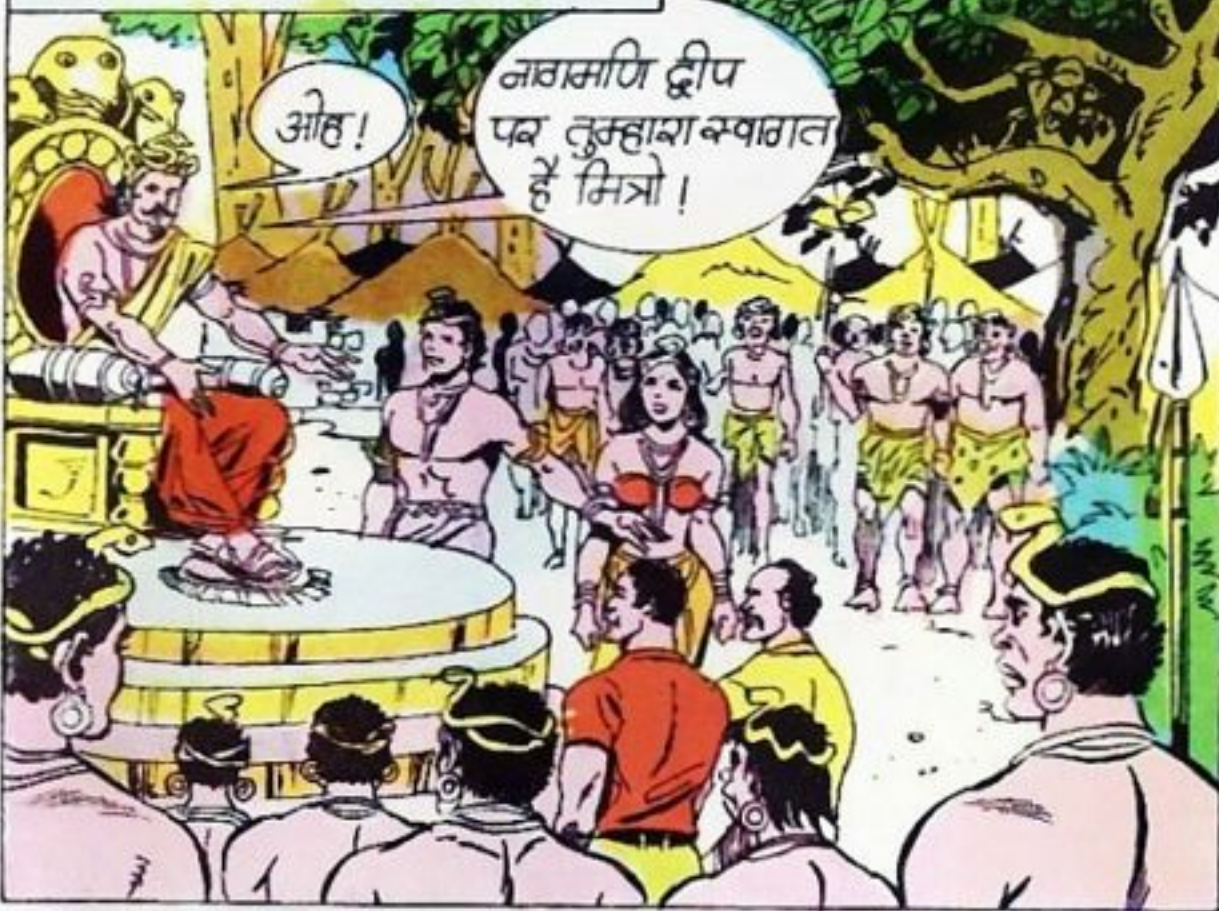
हम तूफान में भटककर यहां तक आ तो गए हैं, लेकिन हम अभी तक इस द्वीप का रहस्य नहीं समझ पाए हैं।

यह सुन मणिराज मुस्कराकर बोला—
तुम दोनों बहुत भाग्यशाली हो बहादुरो, जो इच्छाधारी सांपों के द्वीप पर आ पहुंचे हो।
इच्छाधारी सांपों का द्वीप?
तो क्या आप, और ये सब...

हां ! हम सब इच्छाधारी सांप हैं। यह देखो!
???

मणिराज वापस अपने पूर्व रूप में आ गया और बोला–
अब हम तुमसे एक प्रार्थना करेंगे, बहादुर युवको!
आप आज्ञा करें सर्पराज!

इस द्वीप से अपनी दुनिया में लौटने की कभी कोशिश मत करना ...
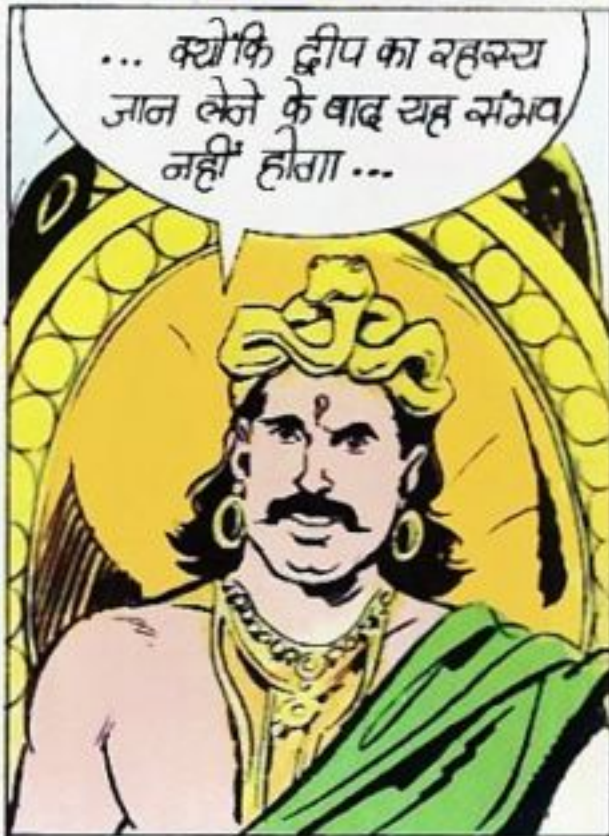
... क्योंकि द्वीप का रहस्य जान लेने के बाद यह संभव नहीं होगा ...
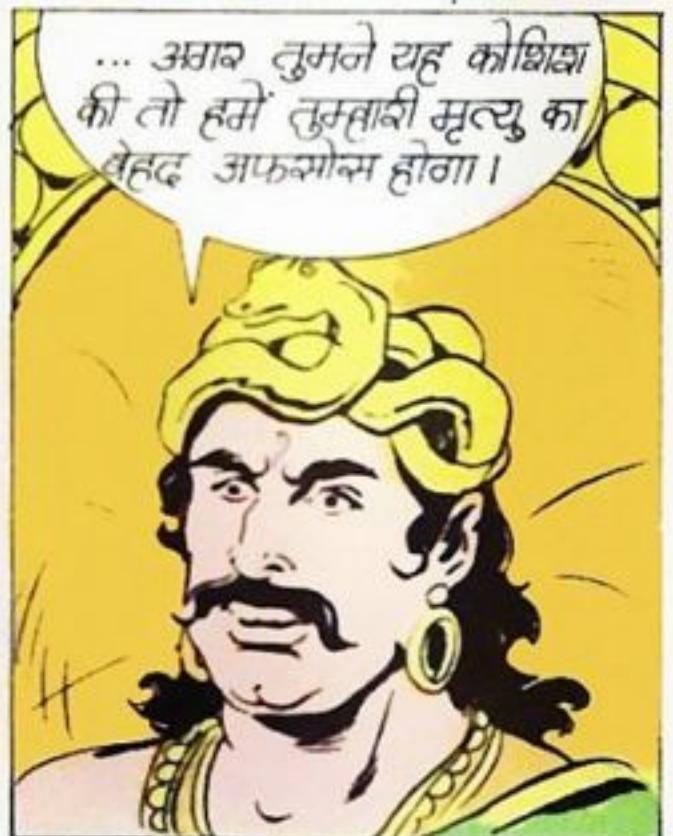
... अगर तुमने यह कोशिश की तो हमें तुम्हारी मृत्यु का बेहद अफसोस होगा।

उस दिन से वे नागमणि कबीले के मेहमान हो गए–
गोगा, यार यहां आकर तो हम फंस गए हैं। लगता है अब शेष जीवन यहीं बिताना होगा।
हुम्म!

एक दिन-
इस अजगरमुंही गुफा में इनकी कुल देवी का मंदिर है।
भीतर चलकर देखें

चलो!

लेकिन मन्दिर के द्वार पर पहुंचते ही-
ठहरो
क... कौन?

तुम इस मन्दिर में नहीं जा सकते। ऐसा मणिराज और पुजारी बाबा का आदेश है।
क..क्यों?

उसकी बात का उत्तर न देकर वह सख्त स्वर में बोला-
अगर तुमने मणिराज के आदेश की अवहेलना की तो परिणाम गम्भीर होंगे।
लौट जाओ!

दोनों चुपचाप लौट गए-
न जाने इस मन्दिर में ऐसा क्या है कि हमें भीतर नहीं जाने दिया जा रहा। मगर मैं भी गुफा में जा कर रहूंगा! आज ही।
और गोगा के दिमाग में मंदिर देखने की जिज्ञासा जन्म लेने लगी।

उसी शाम -
चलो टॉम! गुफा में देवी के दर्शन करेंगे।
क्या? पागल हो गए हो गोगा!

जीवित रहना चाहते हो कि नहीं?
कुछ नहीं होगा तुम चलो।

इस समय यहां कोई नहीं है। यही बेहतर मौका है।
कुछ गड़बड़ न हो जाए। कहीं इच्छाधारी पुजारी...

उससे निपट लेंगे।

और भीतर घुसते ही दोनों की आंखें चुंधिया गईं -
उफ!
इतनी तीव्र प्रकाश किरणें??

फिर जब दोनों कुछ सम्भले -
यह किरणें नाग-देवी की मूर्ति के मस्तक से निकल रही हैं। वह देखो!
??

अचानक पुजारी बाबा चीख पड़ा -
तुम दोनों यहां कैसे आ गए? चले जाओ मूर्खो! भाग जाओ।
इच्छाधारी पुजारी??

सांप क्रोध से फुंफकारते हुए उनकी तरफ लपके—
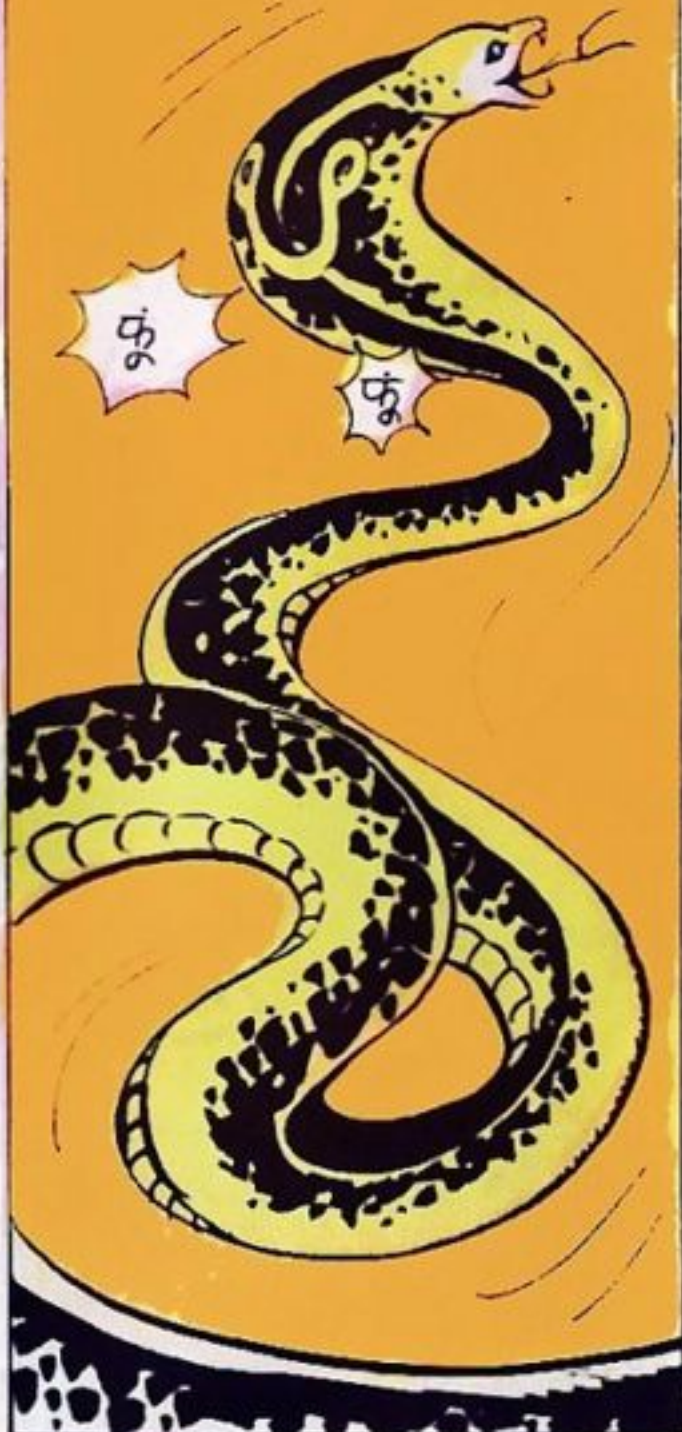
यह देखते ही टॉम भय से चीख पड़ा—

अभी तक देवी के मस्तक से निकल रहे उस तीव्र प्रकाश में खोया गोगा बुरी तरह चौंककर टॉम के साथ मुख्य द्वार की ओर लपका—

इससे पूर्व कि वे द्वार तक पहुंच पाते कि बुरी तरह क्रोधित सांप दोनों पर टूट पड़े—

बुरी तरह चीखते हुए दोनों ने अजगरमुंही मन्दिर से बाहर छलांग लगादी—
आऽऽऽह
आऽऽऽह
??

जमीन पर गिरते ही दोनों बेहोश हो गए। यह देखते ही पुजारी चिल्लाया—
जल्दी करो। इन्हें वैद्यराज के पास ले चलो।
ओह!

इस घटना के छः घण्टे पश्चात्—
इन्हें होश आरहा है मणिराज।
शुक्र है, अब ये खतरे से बाहर हैं।
आऽऽह

कुछ ही देर में दोनों ने आंखें खोल दीं—

अपने चारों ओर भीड़ देखते ही दोनों हड़बड़ाकर उठ बैठे। मणिराज ने गम्भीर स्वर में कहा—
आखिर तुम दोनों ने एक भयानक भूल कर ही दी...

...मेरे मना करने के बाद भी तुम पवित्र नाग मन्दिर में चले गए और परिणाम भी देख लिया। अगर एक पल की भी और देरी तुम्हें वैद्यराज तक पहुंचाने में हो जाती तो तुम दोनों...

हमसे बहुत बड़ी भूल हो गई मणिराज। हमें वहां नहीं जाना चाहिए था। हमें क्षमा कर दें मणिराज।
यह तुम्हारी प्रथम भूल है, अतः हम माफ करते हैं, लेकिन भविष्य में अगर ऐसी भूल हुई तो उसकी सजा मृत्यु ही होगी।

दो माह बाद —
टॉम, मैं कुछ सोच रहा हूं।
क्या ?
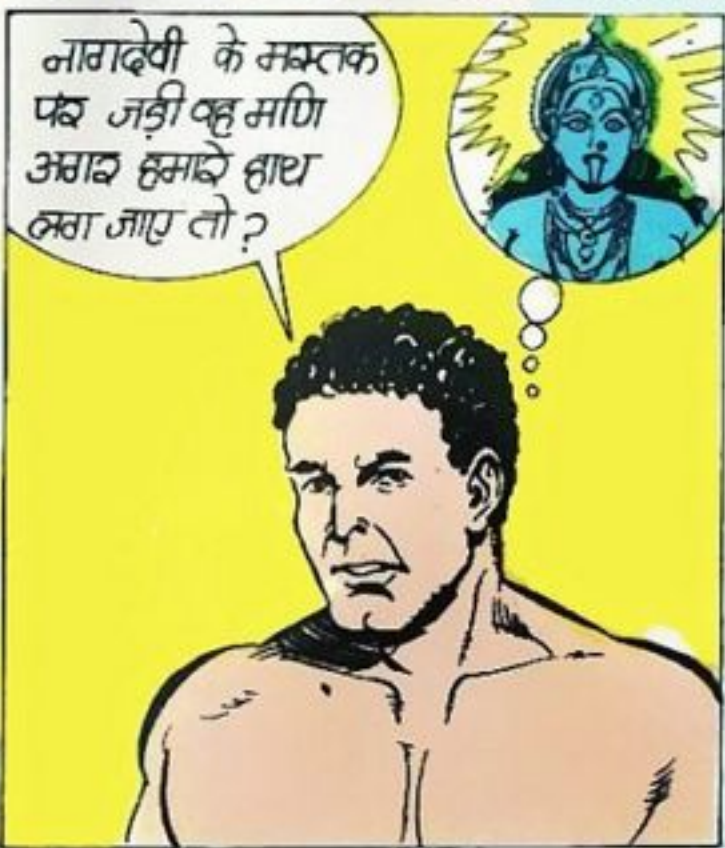
नागदेवी के मस्तक पर जड़ी वह मणि अगर हमारे हाथ लग जाए तो ?

यह सुनते ही टॉम उछल पड़ा —
क्या पागल हो गए हो गोगा! मौत भरी उस रात को भूल गए क्या?
अभी तक नहीं भूला, लेकिन मणि को भी नहीं भूला।

उस दिन से नागमणि गोगा की जागती आंखों का स्वप्न बन गई —
निकोदर कबीले से चुराई करोड़ों की वह मूर्ति हमारे हाथों से निकल गई, लेकिन इस मणि को मैं नहीं निकलने दूंगा...

...लेकिन यह मेरे अकेले के बस का रोग नहीं है। इस बेवकूफ टॉम को राजी करना होगा!

इस काम में वह सफल हुआ -

यह जंगल हमारी मंजिल नहीं है टॉम! शहर की रंगीनियां हमारा वहां इंतजार कर रही हैं।
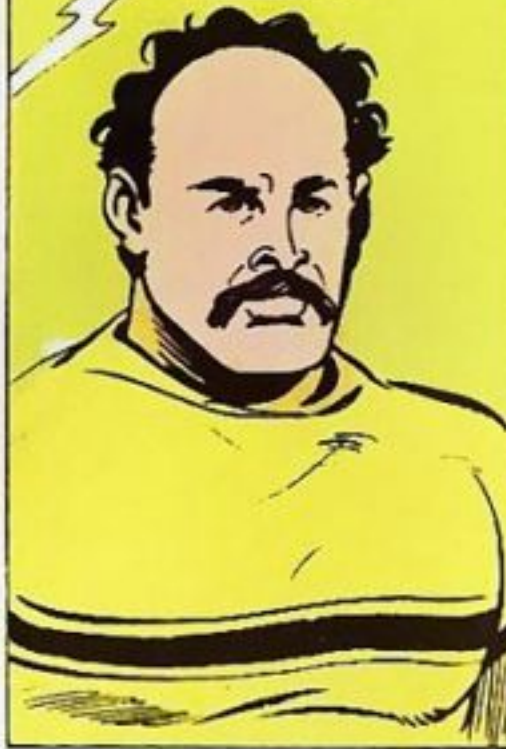
?

सांपों को देखकर मछुआरों में भगदड़ मच गई थी-
भागो!
सांप!

फू
आऽऽह
आईईऽऽ
हिस्स
सांपों ने सभी मछुआरों को जान से मार डाला।

गोगा और टॉम भागकर नाव के निकट पहुंचे-
बदकिस्मत, बेचारे!
छोड़ो उन्हें! यहां आओ, नाव में ढेर सारी मछलियां हैं।

सोचो जरा! ये ढेर सारी विशाल मछलियां हमारे किस काम आएंगी?
खाने के!

बेवकूफ!

खच

ये मछुआरे शायद इन मछलियों व नाव की भेंट हमें देने ही यहां आए थे।
?
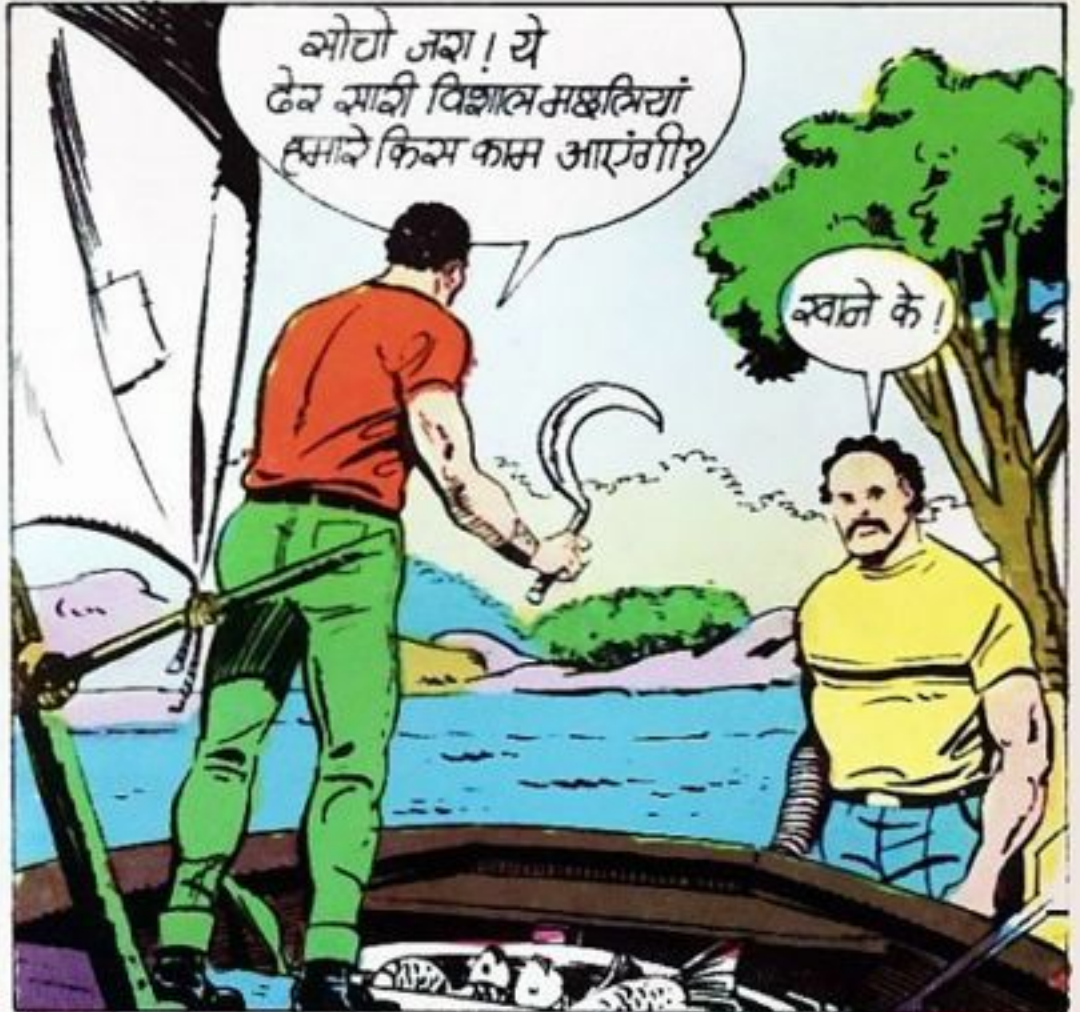
उस घटना के एक माह पश्चात-
आखिर तुम इन मछलियों की खालों का करोगे क्या?
वक्त आने पर सब बता दूंगा। फिलहाल वही करते रहो जो मैं कहूं।
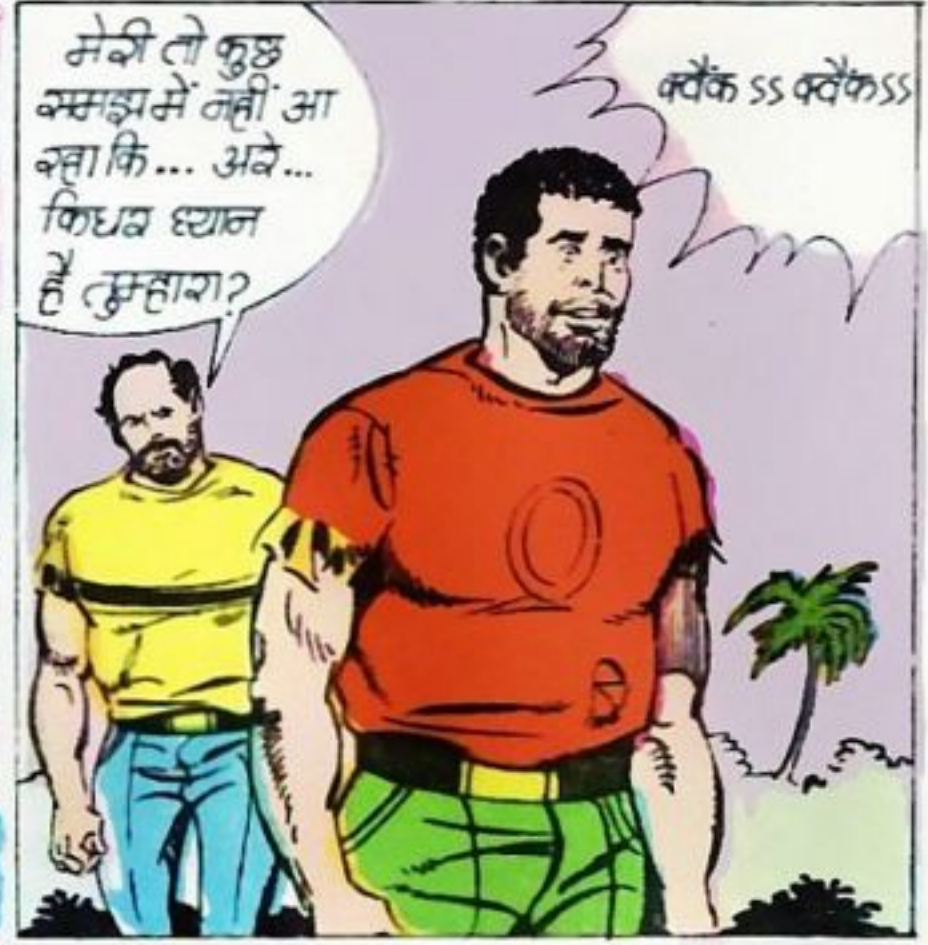
मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा कि... अरे... किधर ध्यान है तुम्हारा?
क्वैंक ऽऽ क्वैंक ऽऽ

क्वैंक ऽऽ क्वैंक ऽऽ
वह बाज उस सांप पर आक्रमण कर रहा है!
वही देख रहा हूं!
फूं

मैं बाज को गोली मार कर ...
??

टॉम ने रिवाल्वर का रुख उधर किया ही था कि गोगा ने लपककर उसका हाथ पकड़ लिया–
पागल हो गए हो टॉम! गोली नहीं चलानी!

गोगा रिवॉल्वर झपटकर नाव की ओर भागा –
मछुआरों का वह जाल?

यह रहा!

क्वैंक ऽऽ
क्वैंक ऽऽ
फू

बाज सांप पर झपटा, लेकिन...
क्वैंक
क्वैंक

...शीघ्र ही गोगा द्वारा फेंके गए उस जाल में फंस गया–
क्वैंक क्वैंक

तुमने इसे पकड़ा क्यों?
सब समझा दूंगा।
क्वैंक...
क्वैंक

बस यह समझ लो कि अब हमें रोज इसी तरह बाज पकड़ने हैं।
??

और फिर दोनों रोज एक बाज जाल में फंसा लेते—

क्वैंक
गुड!
क्वैंक

ओह! बच गया।
??
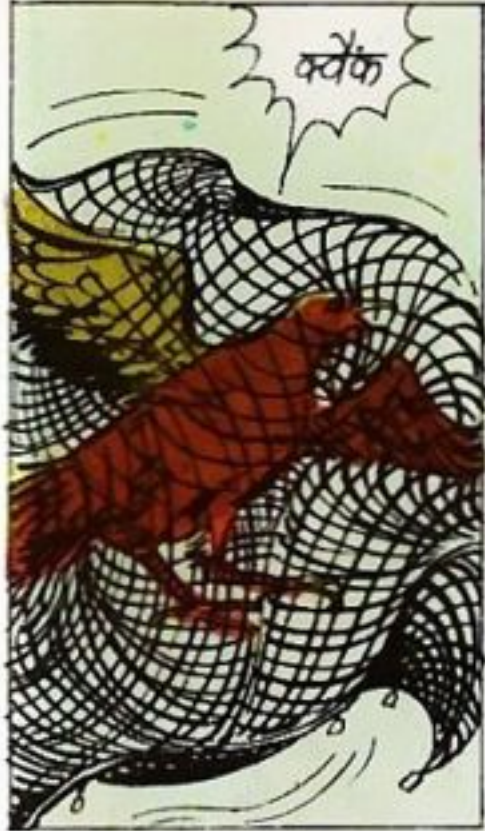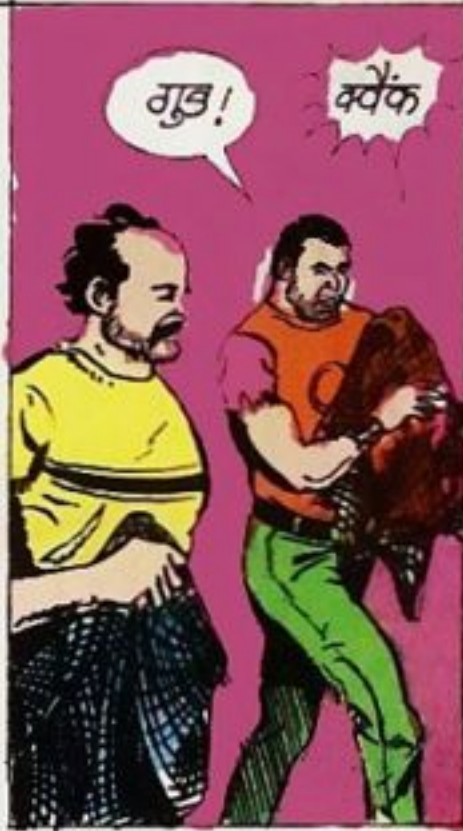
हमारे सबसे बड़े दुश्मन को पकड़ कर क्या करोगे?
मारकर समुद्र में फेंक देंगे।
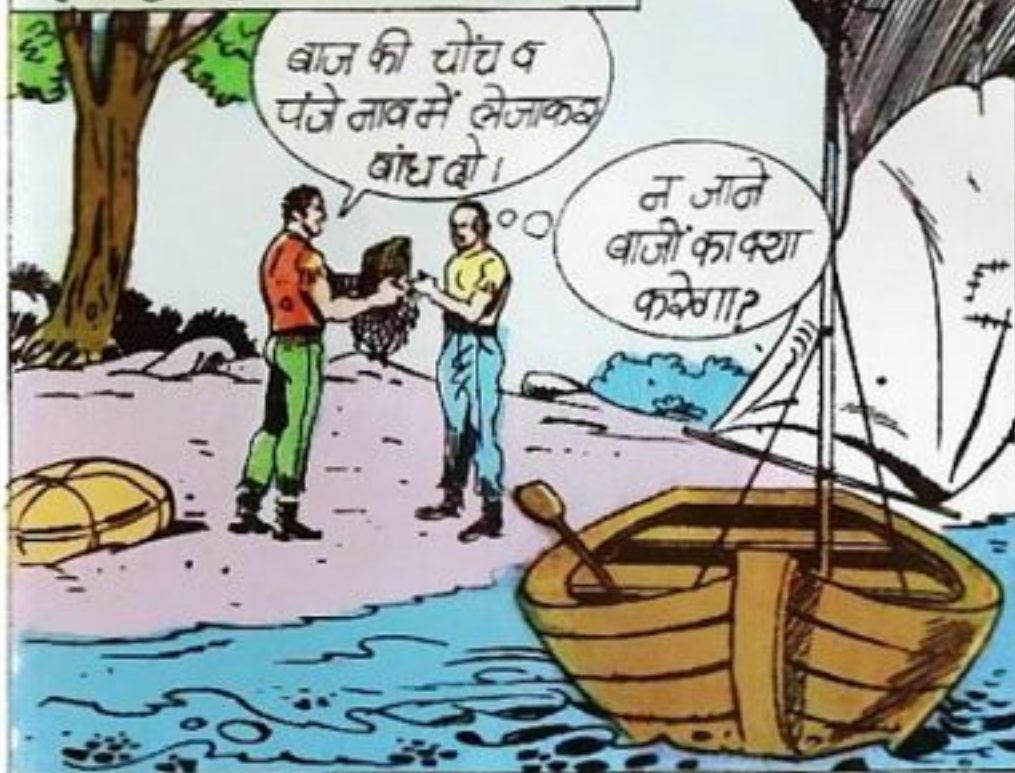
वह संतुष्ट होकर चला गया तब—
बाज की चोंच व पंजे नाव में लेजाकर बांध दो।
न जाने बाजों का क्या करेगा?

तब एक दिन—
तुम मणि को भूले तो नहीं टॉम?
भूल चुका हूं, क्योंकि हम उसे हासिल करने का ख्वाब भी नहीं देख सकते।

मैं तुम्हें ख्वाब में नहीं हकीकत में मणि हासिल करके दिखाऊंगा।...

...आज ही रात को।
कैसे?
बताऊंगा। बस एक काम और निपटा लें।

उसी रात वैद्य सर्पराज के कक्ष में किसी आहट से उनकी आंखें खुल गईं-
क... कौन है?

आ...ह वैद्यराज।
फिक्र मत करो टॉम
क्या हुआ इसे?

अंधेरे में पांव पड़ गया और इस... सांप ने काट लिया।
ओह!

मैं अभी विष काट दवा देता हूं। इस दवा से जहर पानी बन जाता है।
उसी की जरूरत है।

सर्पराज कोई औषधि ले आया -
यह खा लो!

गोगा की मजबूत बाजू फुर्ती के साथ सर्पराज की गर्दन से लिपट गई -
यह सभी दवा मुझे चाहिए सर्पराज

वहशी बन चुके गोगा ने गंडासे का भरपूर वार सर्पराज की छाती पर किया -
आऽऽक

सर्पराज की लाश को दोनों ने पीछे झाड़ियों में डाल दिया –

कुछ दवा दोनों ने तुरन्त खा ली –

बची दवा को जेब के हवाले करके ...

... दोनों पेड़ की कोटर के पास पहुंचे –

खाल पहनने के बाद –

ठीक एक घण्टे बाद –

क्वैंक ऽऽऽ

क्वैंक
??

बाज सांपों पर टूट पड़े–
क्वैंक ऽऽ
फुंकफ
क्वैंक क्वैंक
फुंऽऽऽ

उफ! मुझे तुरन्त मणिराज को सूचना देनी होगी।

उफ
आहऽऽ

जैसे ही वह द्वार से निकलने भगा–
त...तुम?

हम तुम्हारी देवी की मणि लेने आए हैं।

नहीं!

अब तुम्हारी कब्र इसी मन्दिर में बनाएंगे!

गोगा मारकाट मचाता हुआ नाग देवी की मूर्ति की ओर बढ़ा—
क्वैंक
चेहरे को सांपों से बचाना टॉम!
स्पुचाक

टॉम वहीं खड़ा चिल्लाया—
मेरी चिन्ता छोड़ो तुम जल्दी करो गोगा। पुजारी इच्छाधारी सांपों के साथ आता ही होगा।
क्वैंक
फूऽऽ

यह सुनते ही गोगा बिजली की सी तेजी के साथ देवी की मूर्ति की ओर बढ़ा तभी—
आह नो!
???

कई सांप गोगा के पांवों में बेड़ियां बनकर लिपट गए थे—
उफ!

पागल सा हुआ गोगा गंडासे से सांपों पर वार करता चला गया—
कचाक
फचाक

सांपों से छुटकारा पाकर वह देवी की मूर्ति की ओर लपका—
बहुत देर हो चुकी है। अब और नहीं!

बन्दर के समान उछलकर वह मूर्ति पर चढ़ गया और –
ठाक
क्वैंक
फूंऽऽ

तेजी के साथ वह मणि को नागदेवी के मस्तक से उखाड़ने में लग गया –
ठाक ठाक

अचानक एक सांप ने उसके चेहरे पर डस लिया –
आऽऽह
लेकिन सर्पराज की चमत्कारी औषधि के कारण विष का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

वह और तेजी से मणि उखाड़ने लगा। तभी टॉम चिल्लाया –
उं...ह
गोगा! जल्दी!
और इस बार के वार से मणि मस्तक से अलग हो गई –
ठाक

गोगा ने कमर पर लिपटे सांप को एक झटके से दूर फेंका...

... झपटकर मणि उठाई ...

... और —
??
टॉम! भागो टॉम! काम हो गया।

गुफा से निकलकर उस नाव की ओर भागो। हरी अप।....
अब मुझे रिवॉल्वर निकाल ही लेना चाहिए। बाहर उसकी जरूरत पड़ेगी।

लेकिन बाहर निकलते ही जैसे उन पर बिजली सी गिर पड़ी—
ओ माई गॉड!
पुजारी ने मुसीबत खड़ी कर दी, उफ!

टॉम ने तुरन्त फायर कर दिया-

मगर भीड़ रुकी नहीं। टॉम ने पुनः फायर कर दिया-

ठीक उसी पल भयानक शोर मचाते हुए बाज गुफा से निकल कर इच्छाधारी सांपों पर टूट पड़े—

क्वैंक ऽऽऽ क्वैंक

क्वैंक

क्वैंक

??

आह

आऽऽ

उफ

मेरे बच्चों के प्राण बचाकर जो एहसान तुमने मुझपर किया था... उसके बदले हमने तुम्हें जीवनदान दिया, लेकिन आज जो कुछ तुमने किया है, उसकी सजा केवल मृत्यु है।

मृत्यु हमें नहीं तुम्हें मिलेगी मणिराज यह लो।
मणिराज तुरन्त सांप में परिवर्तित हो गया—

यह देख टॉम ने सांप पर गोली चला दी—
धांय

धांय
आह!

?
क्लिक

टॉम ने हाथ में पकड़ा गंडासा ही सांप पर खींच मारा—

बुरी तरह घायल मणिराज पुनः इन्सानी रूप में परिवर्तित हो गया—
आ...ह

मरना है क्या? मणिराज की मौत के बाद इच्छाधारी सांप पतालों के समान हमारे पीछे पड़ गए हैं।
रुकना नहीं गोगा।
आऽऽह्हा..द.. देवी तुम्हें कभी... क्षमा... न... नहीं...
इससे पहले कि वे हम तक आ पहुंचें...
... हमें उनकी निगाहों से दूर हो जाना है।
चप्पू चलाओ गोगा, जल्दी।
उफ! वे निकलगए।
गजब होगया! वापस चलो!
अब वे हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

उधर विषप्रिय और विसर्पी आखिरी सांस भर रहे मणिराज के पास पहुंचे। उन्हें देखते ही मणिराज तड़पकर कह उठा-
आ... ह बहुत बड़ा अनर्थ हो गया है। आ...ह!
मैं... मैं उन हरामजादों को कहीं से भी ढूंढ़कर बड़ी भयानक मौत मारूंगा पिताजी
आ... ह पिताजी, यह क्या हो गया?

मत रो बेटी, विसर्पी!
??
... और तुम भी ध्यान से सुनो विषप्रिय!...

... उस मणि का इस द्वीप पर लौटना... बहुत आवश्यक है... अन्यथा तुम सबकी इच्छाधारी शक्ति हमेशा के लिये समाप्त हो जायेगी... नागमणि द्वीप... तहस-नहस हो जायेगा विषप्रिय!...

... मणि को वापस लाना... और देवी के मस्तक पर प्रतिष्ठित... आ...ह
कहने के साथ ही मणिराज की गर्दन एक तरफ ढुलक गई-

और तब एक दिन-
आप सब मेरा इन्तजार करना। मैं शीघ्र ही उन पापियों को सजा देने के बाद मणि लेकर लौटूंगा शीघ्र ही।

नागमणि द्वीप से सैकड़ों मील दूर बम्बई के एक शांत समुद्र किनारे पर स्थित स्वामी शंकर शहंशाह का आश्रम-
स्वामी शंकर शहंशाह की...
जय...

सभी भक्त आ चुके हैं। स्वामी जी, और आप के दर्शन व प्रसाद पाना चाहते हैं
अवश्य!
डुरूड

स्वामी शंकर-शहंशाह द्वारा आसन ग्रहण करते ही-
स्वामी शंकर शहंशाह की...
जय
शांति! शांति!!

जय - जयकार मेरी नहीं भक्तो... भोले शंकर बाबा की करो... और हमारा शांति का संदेश घर-घर में जन-जन के पास पहुंचाओ।

शिष्य बॉब! इन्हें भोले बाबा की भक्ति का प्रसाद दो।
जो आज्ञा, स्वामी जी।

बॉब सभी भक्तों को एक-एक डमरू बांटने लगा।
यह लो डमरू। इसे बजाते हुए स्वामी जी का संदेश घर-घर पहुंचाओ।
स्वामी जी की... जय..

स्वामी जी की... जय
स्वामी जी की... जय
डुरुड डुरुड

मुद्रक: जापान आर्ट प्रैस